بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 20 सितम्बर 2024 स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

लिक़ा (ईश-दर्शन) के स्तर पर कई बार मानव से ऐसी बातें घटित हो जाती हैं जो कि मानव सामर्थ्य से बढ़ी हुई प्रतीत होती हैं तथा ईश्वरीय शक्ति अपने भीतर रखती हैं।

ख़न्दक नामक युद्ध के परिपेक्ष में सीरत नबवी ﷺ का बयान।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-20.09.24
محلہ احمدیہ قادیان۔پنجاب۔143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- अहज़ाब की लड़ाई के संदर्भ में रसूलुल्लाह ﷺ के पवित्र जीवन के सम्बंध में वर्णन हो रहा था। पिछले ख़ुत्बः में मैंने खाने में बरकत की घटना का वर्णन किया था। इसी तरह खजूरों में बरकत की भी घटना मिलती है। हज़रत बशीर बिन सअद रज़ी. की बेटी बयान करती हैं कि मेरी माँ ने मेरे कपड़ों में थोड़ी सी खजूरें देकर मुझे कहा कि ये अपने बाप तथा मामूं को दे आओ और कहना कि यह तुम्हारा सुबह का खाना है। वे कहती हैं कि मैं वे खजूरें लेकर अपने वालिद एवं मामूं को ढूंडते हुए आंहुज़ूर ﷺ के निकट से गुज़री तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया- ऐ लड़की! ये तेरे पास क्या चीज़ है? मैंने निवेदन पूर्वक कहा कि खजूरें हैं। हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि लाओ! ये खजरें मुझे दे दो। मैंने वे खजूरें आप स. के दोनों हाथों में रख दीं। आप स. ने उन खजूरों को दो कपड़ों से ढक दिया। फिर आप स. ने एक व्यक्ति को कहा कि सब लोगों को खाने के लिए बुला लो। अतः सब लोग आ गए और खजूरें खाने लगे तथा वे खजूरें अधिक होने लगीं, यहाँ तक जब सब खा चुके तो खजूरें कपड़ों के किनारों से गिर रही थीं।

खाने में बरकत की एक अन्य घटना बयान करने के बाद हुज़ूरे अनवर ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. के हवाले से 'सालिक'(ईश्प्रेम में लीन होने के लिए तत्पर मनुष्य) के स्तर तथा 'लिक़ा'(ईश्वर से भेंट) के स्तर के सम्बंध में फ़रमाया कि वह ख़ुदा की ऐसी निकटता प्राप्त कर लेता है कि जैसे आग लोहे के रंग को अपने नीचे ऐसा छिपा लेती है कि प्रत्यक्षतः आग के अतिरिक्त कुछ नज़र नहीं आता। फ़रमाया कि इस स्तर की घनिष्टता में कई बार मनुष्य से ऐसी बातें भी प्रकट हो जाती हैं कि जो मानव शक्ति से बढ़ी हुई प्रतीत होती हैं तथा इलाही शक्ति अपने अन्दर रखती हैं। जैसे हमारे सय्यद व मौला सय्यदुर्रसुल हज़रत ख़ातमुल अम्बिया ﷺ ने बदर के युद्ध में एक कंकरियों की मुट्ठो काफ़िरों पर चलाई और वह मुट्ठी किसी दुआ के द्वारा नहीं बल्कि अपनी रूहानी शक्ति से चलाई, किन्तु मुट्ठी ने इलाही शक्ति दिखलाई तथा विरोधी सेना पर ऐसा चमत्कारी प्रभाव पड़ा कि कोई उनमें से ऐसा न रहा कि जिसकी आँख पर उसका प्रभाव न पहुंचा हो। इस प्रकार की अन्य अनेक चमत्कारी घटनाएँ हैं जो केवल व्यक्तिगत सामर्थ्य के रूप में आँहज़रत ﷺ ने दिखलाई तथा जिनके साथ कोई दुआ न थी।

ख़न्दक़ की खुदाई के समय कई पाखंडियों ने रसूलुल्लाह ﷺ तथा मुसलमानों के साथ खुदाई के काम में सुस्ती की तथा वे थोड़ा सा काम करते और रसूलुल्लाह ﷺ को बताए तथा अनुमति के बिना घरों को खिसक जाते। जबकि मोमिनों को यदि कोई आवश्यकता आ जाती तो वे रसूलुल्लाह ﷺ से आज्ञा मांग लेते तथा आँहज़रत ﷺ उन्हें अनुमति दे देते।

रिवायतों के अनुसार अबू सुफ़यान की सेना के आगमन से तीन दिन पहले ख़न्दक़ तय्यार हो चुकी थी। अब योजना के अनुसार बच्चों तथा युवाओं को उन क़िलों की ओर भेज दिया गया जहाँ महिलाओं को सुरक्षा की दष्टि से रखा गया था। परन्तु जिनकी आयु पन्द्रह वर्ष से अधिक थी उन्हें अनुमति दे दी गई कि यदि चाहें तो यहाँ रहें और चाहें तो क़िलों की ओर चले जाएँ।

आँहज़रत ﷺ ने मदीने में अपना नायब इब्ने उम्मे मकतूम रज़ी. को बनाया। ख़न्दक़ के पास आँहज़रत ﷺ के लिए चमड़े का एक तम्बू लगाया गया। मुहाजिरों का झंडा हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ी. जबकि अन्सार का झंडा हज़रत सअद बिन अबादा रज़ी. के पास था।

मुसलमानों की संख्या के विषय में इतिहासकारों ने बडा मतभेद किया है तथा यह संख्या सात सौ से लेकर तीन हज़ार तक बयान हुई है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. अपनी बुद्धि एवं विवेक से इन समस्त कथनों की समीक्षा करते हुए फ़रमाते हैं कि अहज़ाब नामक युद्ध के तीन भाग थे। एक भाग इसका वह था जब अभी दुश्मन मदीने के सामने नहीं आया था तथा ख़न्दक़ खोदी जा रही थी। इस काम में कम से कम मिट्टी ढोने की सेवा बच्चे भी कर सकते थे तथा कुछ महिलाएँ भी यह काम कर सकती थीं। अतएव जब तक ख़न्दक़ खोदने का काम रहा, मुसलमानों की सेना तीन हज़ार की संख्या में थी। फिर जब दुश्मन आ गया तथा लड़ाई शुरु हो गई तो आँहज़रत ﷺ ने उन सभी लड़कों को जो पन्द्रह वर्ष की आयु से कम थे, उन्हें चले जाने का आदेश दिया तथा जो पन्द्रह वर्ष के थे उन्हें अनुमति दी कि चाहे तो ठहरें, चाहं तो वापस

चले जाएँ। इस रिवायत से ज्ञात होता है कि ख़न्दक़ खोदते समय मुसलमानों की संख्या अधिक थी और युद्ध के समय कम हो गई। बारह सौ की संख्या उस समय की है जब युद्ध आरम्भ हो गया। जब युद्ध के दौरान बनू क़ुरैज़ा काफ़िरों की सेना के साथ मिल गए तथा उन्होंने निश्चय किया कि अचानक मदीने पर हमला कर दें तो रसूलुल्लाह ﷺ ने मदीने की इस दिशा की सुरक्षा भी आवश्यक समझी जिस ओर बनू क़ुरैज़ा थे। इतिहास के पता चलता है कि इस अवसर पर आप स. ने दो सैन्य दल महिलाआं की सुरक्षा के लिए रवाना किए, जिनमें से एक सेना दो सौ, जबकि दूसरी सेना तीन सौ सैनिकों पर आधारित थी। इस तरह जब बारह सौ सैनिकों में से पाँच सौ सैनिक महिलओं की सुरक्षा के लिए चले गए तो बारह सौ वाली सेना सात सौ की संख्या में रह गई।

अबू सुफ़यान के नेतृत्व में क़बीलों की सेनाओं ने मदीने पहुंच कर ख़न्दक़ के चारों ओर डेरे डाल दिए। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. फ़रमाते हैं कि काफ़िरों की सेना मदीने के निकट पहुंची तो अपने सामने ख़न्दक़ को पा कर चकित रह गई। अतएव काफ़िरों ने ख़न्दक़ के चारो ओर घेराव के रंग में डेरे डाल दिए तथा ख़न्दक़ के कमज़ोर भागों से हमला करने का अवसर खोजने लगे। जब दुश्मन ख़न्दक़ को पार करने में असफल रहा तो अन्य चालें चलने लगा। मुशरिकों ने आपस में योजना बनाई कि क़बीला बनू क़ुरैज़ा को अपने साथ मिला लिया जाए ताकि वह मुसलमानों के साथ किए अपने वादे को ताड़ दें तथा मुसलमानों पर भीतर से हमला कर दें। अतः इस भयानक षड्यन्त्र को व्यवहारिक रूप देने के लिए हुयी बिन अख़तब बनू क़ुरैज़ा के सरदार कअब बिन असद के पास गया। आरम्भ में कअब ने हुयी के लिए अपना द्वार भी न खोला तथा साफ़ साफ़ उत्तर दिया कि मैं मुहम्मद ﷺ के साथ समझौता कर चुका हूँ तथा मैंने मुहम्मद ﷺ को सदैव वादों को पूरा करने वाला पाया है। फिर भी हुयी के अत्यधिक आग्रह पर कअब ने न केवल द्वार खोल दिया बल्कि उसके उकसाने पर मुसलमानों के विरुद्ध इस भयावह षड्यन्त्र में शामिल भी हो गया तथा मुसलमानों के साथ की हुई सन्धि को तोड़ दिया।

इस अवसर पर यहूदियों में से बनू क़ुरैज़ा के कुछ लोग जो नेक प्रकृति के थे, वे रसूलुल्लाह ﷺ के पास चले गए तथा इस्लाम भी क़बूल कर लिया। जब उमर बिन ख़त्ताब रज़ी. के माध्यम से रसूलुल्लाह ﷺ को बनू क़रैज़ा के समझौते को तोड़न की सूचना मिली तो आप स. ने बनू क़ुरैज़ा के पास सअद बिन मुआज़ रज़ी. तथा सअद बिन अबादा रज़ी. को कुछ अन्य सहाबियों के साथ भिजवाया तथा उन्हें निर्देश दिया कि यदि यह सूचना सच हो तो सबके सामने ऊँची आवाज़ में न बताना, बल्कि संकेत की भाषा में बात बताना। जब ये लोग बनू क़रैज़ा के पास पहुंचे तो कअब बिन असद इन लोगों के साथ बड़े अपमान जनक व्यवहार के साथे पेश आया तथा समझौते का पूर्णतः इंकार कर दिया।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. फ़रमाते हैं कि वह दुष्ट (कअब बिन असद) इस प्रतिनिधि मंडल से अत्यंत अहंकार के साथ मिला तथा सअदैन की ओर से समझौते के बारे में इसने तथा क़बीले के अन्य लोगों ने कहा कि जाओ! हमारा तुम्हारा कोई समझौता नहीं हुआ है। कअब बिन असद का जवाब सुनने के बाद इस प्रतिनिधि मंडल ने वापस आकर संकेत से आँहुज़ूर ﷺ को बनू क़ुरैज़ा के सन्धि विच्छेद

के विषय में बता दिया। आँहुजूर ﷺ इन मानसिक स्थिति का भंग तथा अचेत हो जाने वाले क्षणों में कुछ देर चुप रहे तथा इस ख़बर का आप स. पर कोई प्रभाव न हुआ। कोई सामान्य मनुष्य होता तो मानसिक रूप से टूट जाता। परन्तु थोड़ी देर के अन्तराल के बाद आप स. ने फ़रमाया कि ऐ मोमिनों की जमाअत! अल्लाह तआला की मदद तथा सहयोग के साथ ख़ुश हो जाओ, मुझे आशा है कि एक समय आएगा कि मैं ख़ाना-ए-कअबा की परिक्रमा कर रहा हूँगा तथा उसकी चाबियाँ मेरे हाथ में होंगी और क़ैसर व किसरा (पूराने ज़माने के दो महान शासन) अवश्य नष्ट हो जाएँगे।

खाई वाले युद्ध का विवरण आगे जारी रहने का इरशाद फ़रमाने के बाद हुज़रे अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आज से ख़ुद्दामुल अहमदिया का इज्तिमा भी शुरु हो रहा है। ख़ुददाम इससे पूर्णतः लाभान्वित होने का प्रयास करें, यद्यपि मौसम की भविष्य वाणी यही है कि सम्भवतः वर्षा होती रहे, किन्तु अल्लाह तआला हर हाल में फ़ज़्ल फ़रमाए तथा समस्त प्रोग्राम उनके सुविधा पूर्वक हो जाएँ। ख़ुद्दाम इन दिनों में रूहानी तथा ज्ञान वर्धक प्रतिभाओं को बढ़ाने की भी कोशिश करें। जिन दुआओं तथा दरूद की ओर मैंने ध्यान दिलाया था एवं प्रेरणा दी थी, इन दिनों में उनकी ओर विशेष ध्यान रखें तथा सदव उन्हें दोहराते रहें।

ख़ुत्बः के अन्तिम भाग में हुज़ूरे अनवर ने चार मृतकों का सद्वर्णन तथा जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई-

1- मुकर्रम हबीबुर्रहमान ज़ेरवी साहब (वाक़िफ़े ज़िन्दगी) ऑफ़ रबवा। मृतक अपनी मृत्यु के समय नायब नाज़िर दीवान के पद पर सेवा की तौफ़ीक़ पा रहे थे। 2- मुकर्रम शेख़ डा. रियाजुल हसन साहब सुपुत्र ब्रिगेडियर डा. ज़ियाउल हसन साहब मरहूम। मरहूम को वाक़िफ़े ज़िन्दगी के रूप में लगभग बीस वर्ष से अधिक अवधि तक अफ़रीक़ा तथा पाकिस्तान में मानव सेवा का सामर्थ्य मिला। 3- मुकर्रम प्रो. अब्दुल जलील सादिक़ साहब रबवा। मरहूम अपनी मृत्यु के समय सदर अन्जुमन अहमदिया रबवा में इंचार्ज तर्तीब व रिकार्ड के रूप में (नायब नाज़िर) की तौफ़ीक़ पा रहे थे। 4- मुकर्रम मास्टर मुनीर अहमद साहब ऑफ़ झंग, मरहूम को लम्बी अवधि तक विभिन्न जमाअती सेवाओं का सुअवसर मिलता रहा, असीरान (अहमदियत के कारण जेल में बन्द व्यक्ति) की सेवा के हवाले से मरहूम को अत्यंत प्रशंसनीय सेवा की तौफ़ीक़ मिली। हुज़ूरे अनवर ने समस्त मृतकों की मग़फ़िरत तथा दर्जात की बुलन्दी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, संपर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, क़ादियान, पंजाब-18001032131